रे हो दुनियां को तूं कहा

रे हो दुनियां को तूं कहा पुकारे, ए सब कोई है स्याना।
ए मदमाती अपने रंग राती, करत मन का मान्या।।

रे हो याही फंद में साध संतरी, पुकार पुकार पछताना।
कोई कहे दुनियां बुरी करत है, कोई भली कहे भुलाना।।

रे हो बोहोत दिन बिगूती यामें, कर कर ग्यान गुमाना।
चुप कर चतुराई लिए जात है, तूं न कर निंदा न बखाना।।

रे हो तूं कर तेरी होत अबेरी, आप न देखे उरझाना।
अब तूं छोड़ सकल बिध, जात अवसर तेरा जान्या।।

एही शब्द एक उठे अवनी में, नहीं कोई नेह समाना।
पेहेचान पिउ तूं अछरातीत, ताही से रहो लपटाना।।

अहनिस आवेस हुअड़ा अंग में, फिरया दिलड़ा हुआ दिवाना।
महामत प्रेमें खेले पिया सों, ए मद है मस्ताना।।